# राम का एकपत्नीव्रतः विभिन्न रामायणों के संदर्भ से

**डॉ शोभा निगम**

मुकर्जी कम्पाउंड, फौवारा चौक,
बैरनबाजार,रायपुर
मो. 09826947776

सीता से बिछड़ने के बाद राम द्वारा स्वर्णप्रतिमा बनवाने तथा पुनर्विवाह न कर यज्ञ आदि धार्मिक अनुष्ठानों में उसे ही अपने वामांग में स्थान देने का अनेक रामकथाकारों ने उल्लेख किया है। जनमानस में भी यह बात प्रचलित है। भारतीय इतिहास में संभवतः पहली और आखिरी घटना होगी जब किसी राजा ने पत्नी के स्थान पर उसकी प्रतिमा को वामांग में स्थान देकर यज्ञकार्य किया हो। निश्चय ही यह बात राम के सीता-त्याग के कृत्य की कठोरता को कुछ कम करती है। वाल्मीकीय रामायण में भी इसका उल्लेख है। परवर्ती अधिकांश रामकथाकारों ने राम को एक पत्नीव्रती बताया है।

राम के मर्यादा पुरुषोत्तम चरित्र में उनके एकपत्नीव्रत का उल्लेख राम के चरित्र को महानता की नई ऊंचाइयों पर ले जाता है। सीता के रहते हुए तो वे केवल सीता से ही बंधे रहे, सीता के बाद भी उन्होंने दूसरा ब्याह नहीं किया, यह और बड़ी बात है। विशेषकर तब, जब राजाओं की एकाधिक पत्नियां होना आम बात थी, राम के इस गुण का महत्व और बढ़ जाता है। भोग के लिये तो राजागण अनेक पत्नियां रखते ही थे, राजनीतिक समीकरण को ध्यान में रखते हुए भी ऐसा प्रायः किया जाता था। स्वयं राजा दशरथ की वाल्मीकीय रामायण के अनुसार तीन सौ पचास पत्नियां थीं। कुछ रामायणों में इनकी संख्या और अधिक बताई गई है।

राम का यह एकपत्नीव्रत भारतीयों के लिये गर्व का विषय रहा है। मनुष्य की प्रवृति चाहे जो हो ...ऐतिहासिक सत्य भी चाहे जो रहे हों , किंतु गृहस्थी का श्रेष्ठ मूल्य यही है कि जैसे नारी के लिये एकपतिव्रत धर्म है ,वैसे ही पुरुष के लिये एकपत्नीव्रत धर्म है। राम की एक बड़ी विशेषता इस धर्म का पालन भी है।

वाल्मीकीय रामायण में राम का सीता के प्रति अनन्य प्रेम जगह-जगह झलकता है। पंचवटी में भुवनसुंदरी का रुप धारण कर राम से प्रणयनिवेदन करने आई शूर्पणखा से राम कहते हैं कि मैं अपनी पत्नी में अनुरक्त हूं, ,तुम्हें नहीं अपना सकता। सीता भी राम के इस गुण की प्रशंसक थी। अरण्यकांड में एक प्रसंग में वह राम से कहती हैं कि आप में धर्म का नाश करने वाली परस्त्रीगमन की अभिलाषा आपको हो ही कैसे सकती है?:कुतोऽभिलशणं स्त्रीणां परेशां धर्मनाशनम।' अपनी पत्नी में सदा अनुरक्त रहने वाले आपके मन में यह दोष तो कभी उदित नहीं हुआ है और न ही भविष्य में होगा। आपकी जितेन्द्रियता को मैं अच्छे से जानती हूं। वे राम को स्वदारानिरत अर्थात् अपनी ही पत्नी में संतुष्ट रहने वाला कहती (अर.कां.9.5-8)। वाल्मीकीय रामायण में कैकेयी तक राम के इस गुण का बखान करती है। जब भरत पूछते हैं कि राम ने आखिर क्या अपराध किया जिसके दंडस्वरूप राजा ने उन्हें वनवास दिया , क्या उनका मन परस्त्री में अनुरक्त हुआ है? इस पर कैकेयी कहती है कि 'न रामः परदारान् स चक्षुर्भ्यामपि पश्यति' अर्थात् राम किसी परस्त्री पर दृष्टि नहीं डालते हैं।(अयो.कां. 72.48)

परवर्ती रामायणकारों ने राम के इस गुण का सुंदरता से बखान किया है।

तमिल कंब रामायण में सीता हनुमान से कहती हैं कि राम के दिव्य कानों में तुम एक रहस्य की बात कहना, 'जब आपने मेरा पाणिग्रहण किया था तब अपना यह निश्चय सुनाया था कि इस जन्म में दो स्त्रियों का मैं मन से भी स्पर्श नहीं करुंगा। यह मेरे लिये वरदान वाक्य था।'

ओड़िया रामायण वैदेही विलास में उल्लेख है कि राम सीता के साथ प्रथम मिलन में दीपाग्नि को छूकर प्रतिज्ञा करते हैं कि जब तक शरीर में प्राण है, मैं अन्य रमणी से प्रेम नहीं करुंगा। तब सीता भी एक प्रतिज्ञा करती हैं। प्रथम मिलन था, अतः वह मुख से बोल तो नहीं पाईं किंतु उन्होंने अपने केशों से केवड़े की एक पंखुड़ी निकाली और अपनी चिबुक से कस्तूरी पोंछ कर पंखुड़ी पर लिखा , 'आज तक मेरा मन किसी परपुरुष के प्रति नहीं ललचाया है ,न ही भविष्य में कभी ललचाएगा। जन्म-जन्म में मेरा मन आपके प्रति ही आकर्षित रहेगा। आगे वे यह भी लिखती हैं ...इस जन्म में तो आप मेरे कांत हुए। अगले जन्म में यदि कोई दूसरा वर नियत हो तो उसे विवाह-मंडप से लौट जाना पड़ेगा। दूत से मैं तुम्हारी खोज करवा लूंगी। (वै.वि.15-13)

ओड़िया विचित्र रामायण में भी उल्लेख है कि पहली रात में ही दीपक को साक्षी मानकर राम ने सीता के सामने एकपत्नीव्रत की प्रतिज्ञा की थी। इसलिये परशुराम का धनुष ग्रहण करते देख जब सीता डर जाती हैं कि इस धनुष के कारण राम को कहीं दूसरी कन्या तो नहीं मिलेगी, तब राम कहते हैं, 'मत डरो। मैंने तुमसे जो प्रतिज्ञा की है, उसमें दृढ़ रहूंगा।' (वि.रा.छंद 60-61)

ओडिया जगमोहन रामामायण में सीता हनुमान से बताती है कि विवाह के दिन हम दोनों ने कुलदीपक को छूकर प्रतिज्ञा की थी कि हम किसी अन्य स्त्री-पुरूष का स्पर्श नहीं करेंगे। जब मैंने पूछा कि जब मेरा यौवन और रुप ढल जायेगा , क्या तब आपका प्रेम समाप्त हो जायेगा? तब राम ने कहा था, तुम्हारा यह युवा रुप कभी समाप्त नहीं होगा। (खंड 3 पृ. 153)

यहां उल्लेखनीय है कि सीता से बिछड़ने के बाद राम द्वारा स्वर्णप्रतिमा बनवाने तथा पुनर्विवाह न कर यज्ञ आदि धार्मिक अनुष्ठानों में उसे ही अपने वामांग में स्थान देने का अनेक रामकथाकारों ने उल्लेख